नेपाल, रूस, भारत के साहित्य एवं संस्कृति का अंतः सम्बंध

संपादक
डॉ॰ मोनिका देवी
प्रो॰ डॉ॰ संजय कुमार शर्मा
प्रो॰ डॉ॰ महेश गांगुर्डे

सह संपादक
डॉ॰ अलका यतीन्द्र यादव

12 वैश्विक संदर्भ में
भारतीय संस्कृति और हिंदी
डॉ. सविता शर्मा 81
13 भारतीय साहित्य में नेपाल का योगदान
डॉ. शबाना हबीब 89
14 धर्म को साधे, जीवन सध जायेगा
डॉ. जी. प्रवीणा 102
15 अरुणाचल प्रदेश की गालो जनजाति
का लोक संस्कृति
सुश्री डाने कायी 108
16 रूस में हिंदी की दशा व दिशा
महेंद्र वसावे 119
17 भारत और नेपाल के साहित्य मे संस्कृति
डॉ. अमिला एल. टंडेल 122
18 भारत नेपाल मैत्री : एक विशिष्ट विश्लेषण
(विधिक रणनीतिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयाम)
डॉ. एस. एस. दास 13!
19 भारतीय भाषा (हिंदी) की अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता
रूस एवं नेपाल के संदर्भ में
डॉ. पूजा यादव 14
20 संस्कृति, साहित्य और राष्ट्र भारत और
नेपाल के विशेष संदर्भ में
डॉ. आर. के. जाघव 14
21 भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में :
21वीं सदी में जीवन मूल्यों का प्रभाव
ज्योति सक्सेना 15
22 रूस और भारत के संस्कृति पर कोविड 19 का प्रभाव
मांडवी नामदेव 15
23 भारत और नेपाल की भारतीय संस्कृति
रमेश के पार्वती 16

रूस में हिंदी की दशा व दिशा

-प्रो. महेंद्र वसावे

भारतीय भाषाओं के प्रति रूस में झुकाव पंद्रहवी शताब्दी में ही देखने को मिलता है। रूस और भारतीय संबंधों पर सीधा असर भाषा का ही है। भारतीय भाषा संस्कृति अनायास ही व्यक्ति को अपनी ओर खींचती है। रूसी विद्वान गेरासिम लेबिदेव (1749-1817) बारह साल तक भारत में रहे थे। शुरू में कुछ वर्ष चेन्नई (मद्रास) में रहने के बाद में कोलकत्ता चले गए थे । और लंबे समय तक वहाँ रहे। मूल तौर पर गेरासिम लेबिदेव संगीतकार थे। और उन्होंने यूरोपीय संगीत की परंपराओं को भारतीय संगीत से जोड़ने की कोशिश की। संगीत और नाटक का आपस में बहुत गहरा संबंध है। इसलिए उन्होंने भारत में कोलकत्ता में एक थियेटर की भी स्थापना की थी। थियेटर के अलावा उन्होंने भारत की भाषाओं पर भी महत्त्वपूर्ण काम किया।

सन् 1801 में लंदन में इनकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसका शीर्षक था-A grammar of the pure and miÛed east Indian dialeets यानी शुद्द और मिश्रित पूर्वी भारतीय भाषाओं का व्याकरण अपनी इस किताब में गेरासिम लेबिदेव ने कोलकाता में बोली जाने वाली हिंदुस्तानी भाषा के व्याकरण पर चर्चा की थी। यह वह भाषा थी। "यह आमतौर पर कोलकाता के व्यापारी वर्ग के बीच बोली जाती थी।" लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि यह सिर्फ़ व्यापारी ही बोल सकते थे उनकी भाषा शब्दों की खिचड़ी थी।

रूसी कवियों ने सबसे पहले जिस भारतीय कवि की रचनाओं का अनुवाद किया वह कालिदास है। प्रसिद्ध रूसी कवि अबेवसान्दर पुश्किन के पूर्ववर्ती कवि वसीली झुकोवस्की (1783-1852) ने सबसे पहले कालिदास की रचना 'नल और दम्यती' का रूसी भाषा में अनुवाद किया। उसके बाद कालिदास की रचना 'शकुंतला' का अनुवाद कस्तान्तिन बालमंत (1887-1942) ने किया फिर उनके

प्रवृत्ति कवि इगर सिविरयानीन (1887-1941) ने भी कालिदास की रचनाओं के अनुवाद किये। 19वीं शताब्दी में भारत के प्रती लगाव बढ़ता गया।

रूसी लोग प्राचीन भारतीय संस्कृति, दर्शन, इतिहास और कला में गहरी रुचि ले रहे थे। इसलिए रूसी भाषा में सबसे पहले कालिदास की रचनाओं के अनुवाद सामने आये। 19वीं सदी के अंत में रूसी लेखक अ॰विगोरनितस्की (1897) अ फ॰ गिल्फ़ेर्दिंग (1899) और इ॰प॰ योगेल्लो (1902) ने हिंदुस्तानी भाषा के बारे में पहली पुस्तक लिखी। आरंभ में यह व्यवहारिक पाठ्य पुस्तकें थी और इनमें भाषा के साधारण नियम ही दिए गए थे। लेकिन आज लेखकों और इन पुस्तकों को रूस में कोई याद भी नहीं करता।

रूस में 1917 की क्रांति के बाद आधुनिक भारतीय भाषाओं का गंभीरता से शुरू हुआ। उनसे पहले 18वी सदी के आखिर में भारतीय भाषाओं के अध्ययन का प्रयास किया, लेकिन व्यवस्थित रूप से उनके अध्ययन-अध्यापन की कोई व्यवस्था नहीं थी। रूस में सबसे पहले उर्दू का अध्ययन किया। अलेक्सेस रात्रिकप (1890-1952)ने लेनिग्राद (सेंट पीटर्सबर्ग) विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन शुरू किया। उन्हे रूस में भारतीय भाषाओं के अध्ययन और अध्यापन की परंपरा का संस्थापक कहा जा सकता है।

1997 से मास्को लेनिनग्राद और ताशकंद के कई वित्तीय पाठशालाओ में हिंदी पढ़ाई जाने लगी। मास्को राजकीय विश्वविद्यालय और कुछ अन्य विश्वविद्यालयों में एक अलग पूर्वी भाषाओं के विभाग को बनाया गया जहाँ पर हिंदी और उर्दू की शिक्षा पर जोर दिया जाने लगा। लेनिनग्राद में भारतीय जीवित भाषाओं की संस्था अंग्रेज़ी (Institute of Indian Living Languages) की नींव रखी गई। जहाँ हिंदी मराठी, तमिल और बंगला भाषा की शिक्षा की व्यवस्था की। मास्को और ताशकंद रेडियो से लगभग सभी भारतीय भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित होने लगे।

सन् 1960 के दशक से रूस और भारत दोनों ओर से द्विपक्षीय छात्रवृत्ति दी जाने लगी थी। इसके अंतर्गत भारतीय छात्र रूसी भाषा, साहित्य,विज्ञान आदि पढ़ाने रूस जाने लगे जबकि रूसी छात्र भारतीय भाषाएँ सीखने भारत आने लगे। कुछ छात्र नृत्य और शास्त्रीय संगीत संगीत सीखने भी भारत आने लगे। वर्तमान स्थिति यह है कि रूस में कई रूसी संस्थाओं द्वारा जिनमें विश्वविद्यालय और स्कूल शामिल है,हिंदी पढ़ाई जाती है। इसके अतिरिक्त कई रूसी तमिल, मराठी, गुजराती, बंगाली, उर्दू, संस्कृत और पाली भाषा अच्छे से जानते हैं। रूस के कुछ संस्थान जहाँ हिंदी भाषा का अध्ययन होता है। मास्को राज्य के विद्यालय, रूसी राजकीय मानवीय विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय संबंध विश्वविद्यालय पीतेरपूर्ण विश्वविद्यालय, विद्यालय

ास्को और फॉर ईस्ट विश्वविद्यालय इलादीवोस्त्क है।
ा में जवाहरलाल नेहरू संस्कृति केंद्र में हिंदी शिक्षण की कक्षाएँ नियमित
ाती है। और जिसमें हर आयु समूह के हिंदी सीखने के अभिलाषी लोग
ेंद्र की ओर से प्रतिवर्ष सितंबर में ही हिंदी दिवस और जनवरी माह में
दिवस का आयोजन होता है। इसमें केंद्र साहित्य मास्को के विभिन्न
थानों के विद्यार्थी प्राध्यापक एवं भारत विद हिस्सा लेते हैं। 13 अक्टूबर
अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र हिंदी सम्मेलन का आयोजन सफल रहा जिसमें रूस के
गरों के अलावा यूरोपीय क्षेत्र के एक दर्जन से अधिक देशों के प्रतिनिधियों
ाया। रूस में भारतीय साहित्य व संस्कृति को सीखने की जिज्ञासा लोगों
जा रही है। और उसके विभिन्न शोध छात्र भारत के विश्वविद्यालयों में
ाँ की पौराणिक एवं धार्मिक किताबों का ध्यान करते हैं। रूस भारत
एवं संस्कृति का आपस में अध्यात्मिक लगाव है। भारत से विद्वजन रूस
ाँ की संस्कृति को वहाँ प्रचार-प्रसार करते हैं। दिशा संस्था मास्को रूस हिंदी
और साहित्य की कार्यवाहक है। वहाँ पर समय-समय पर रामलीला का
य भारतीय नाटकों को को कार्य होता है।

4-22

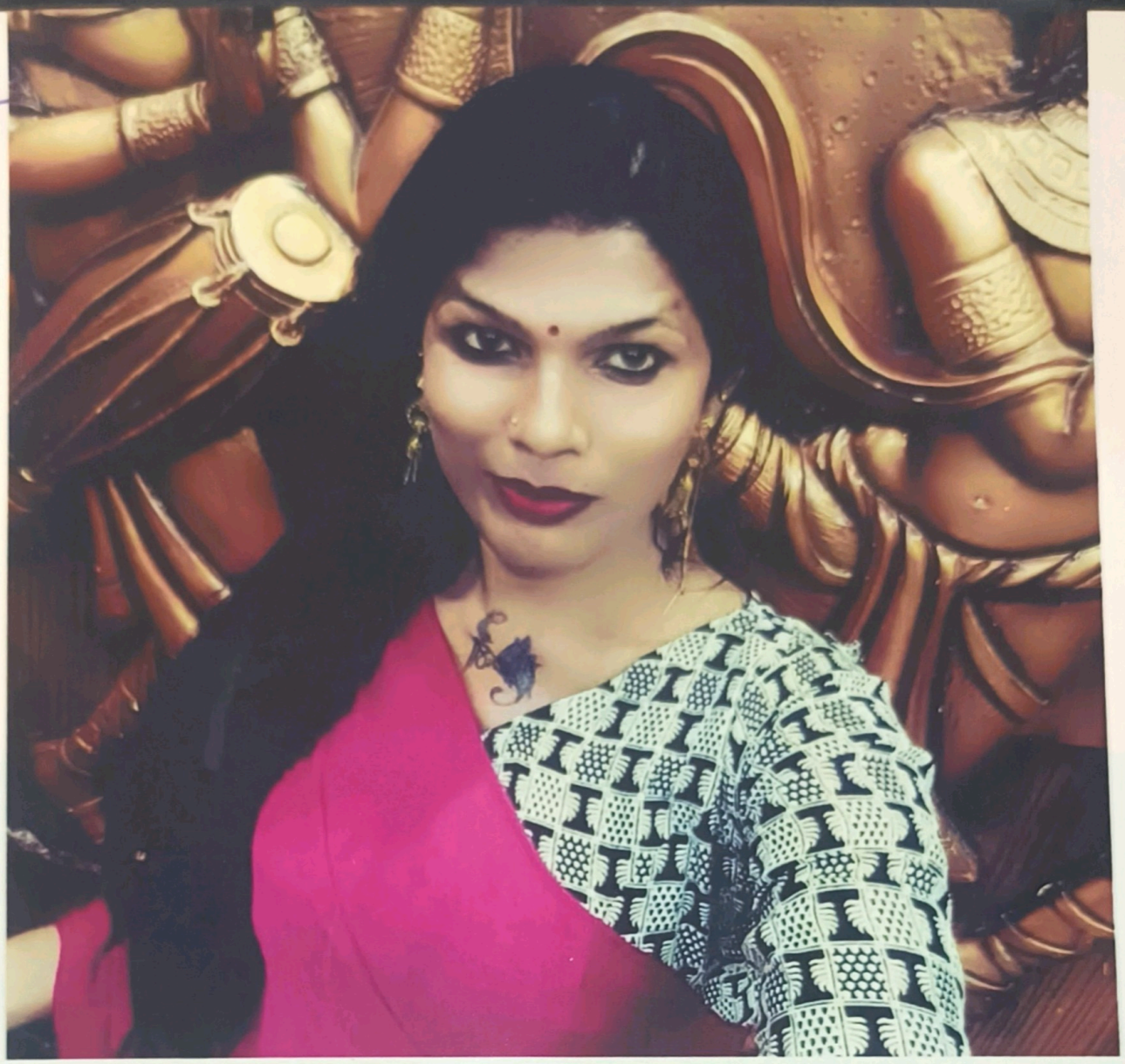

किन्नर विमर्श

अस्तित्व की तलाश में सिमरन

संपादक • नारायण कोवासा नारलाई | डॉ. राजपाल
सह संपादक • डॉ. बलराम गुप्ता

अनुक्रम

	शुभकामना संदेश	iii
	सिमरन सिंह की कलम से शुभकामना...	iv
	संपादकीय	v
1.	किन्नरों को समान अधिकार **डॉ. सन्तोष खन्ना**	09
2.	सिमरन : सिसकता बचपन बिखरती जिन्दगी **सुमन टाँक** **प्रो॰ संतराम वैश्य**	15
3.	समाज से तिरस्कृत थर्ड जेंडर **प्रा.डॉ.विश्वनाथ किशन भालेराव**	19
4.	'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' उपन्यास में निरूपित विभिन्न समस्याएं **डॉ. हेमल एम.व्यास**	25
5.	सिमरन उपन्यास में किन्नर आधारित में पारिवारिक जीवन की ललक और किन्नर जीवन **क्षत्रिय दीपिका जितेन्द्र**	34
6.	किन्नर समाज का यथार्थ **डॉ. लता अग्रवाल**	39
7.	करोना का दौर : छत्तीसगढ़ में किन्नरों की भूमिका **अलका यतीन्द्र यादव**	51
8.	तीसरी सत्ता की व्यथा : पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा **डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा**	55
9.	किन्नर विमर्श : अस्तित्व की तलाश में सिमरन **प्रा. एम.जी. वसावे**	60
10.	इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में किन्नर विमर्श **डॉ. महेश वसंतराव गागुर्डे**	64

किन्नर विमर्श : अस्तित्व की तलाश में सिमरन

प्रा. एम.जी. वसावे
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, हिन्दी विभाग
अक्कलकुवा

यह डॉ. मोनिका देवी द्वारा रचित जीवनी पर उपन्यास है। इस उपन्यास में सिमरन के अस्तित्व उसका जीवन किन अभाव व समाज का किन्नर के प्रति कैसा नजरिया है, इन सब को यथार्थ वर्णन किया गया है।

आज वैश्विक स्तर पर पर्यावरण विमर्श, दलित विमर्श, नारी विमर्श, प्रवासी विमर्श, वृद्ध विमर्श, दिव्यांग विमर्श आदि की भांति ही समाज की मुख्यधारा से कटा हो यह समुदाय भी अपने अस्तित्व के लिए लड़ाई लड़ रहा है। आज जरूरत है कि कोई संगठन इनकी आवाज बनकर सामने आयें। भारतीय संस्कृति में सदियों से महत्त्वपूर्ण रहे किन्नर समाज स्वयं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए संघर्षरत है। मध्य प्रदेश की राजनीति में शबनम मौसी एक चर्चित नाम है वह राजनीति में प्रवेश कर अपने वे अपने समुदाय के लिए बात कर रही है और थर्ड जेंडर के रूप में खुद को स्थापित करने की कानूनी लड़ाई जीत भी चुका है। अभी भी किन्नरों को अपने अधिकारों के लिए अधिक संघर्ष की जरूरत है, क्योंकि अभी तो शुरुआत हुई है मंजिल बहुत दूर है। जीवन की विषमताओं की भुक्तभोगी के रूप में सिमरन कहती है श्किन्नर का जीवन सरल नहीं होता जीते भी है रो-रो कर आंसू ही सहारा बन जाते हैं, लेकिन अपना कहने के लिए कोई हाथ आगे नहीं बढ़ताश् किन्नर सिमरन का जीवन भी अपवाद नहीं है। नर रूप में जन्मा बच्चा जो आज सिमरन सिंह है।

इसका नाम शत्रुघ्न (शत्रु का नाश करने वाला) माता-पिता की प्रथम संतान होने के कारण असीम प्यार.दुलार में नर और नारी दोनों दृष्टियों से उसके अपूर्ण शरीर जैविक विकलांगता की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया। तथापि उसकी विशिष्ट चाल, स्त्रियोंचित रुचियां, श्रृंगार गृह, कार्य मरदानी आवाज उसे सामान्य से अलग

कर देती थी। किन्नरों की भीख मांगती टोली उनकी वेशभूषा एवं हाव-भाव लड़कों की भीड़ द्वारा उन्हें छक्का कहकर चिढ़ाना उसकी बाल दृष्टि से परे था।

उस घटना के बाद सिमरन यह जानने की कोशिश करती रही कि उनको हक छक्का क्यों बुलाया, लेकिन किसी ने भी उसकी जिज्ञासा का समाधान नहीं किया यह बात उसके मन में घूमती रही। 8 वर्ष की आयु में ही अपने साथियों, सहपाठियों आदि की कुत्सित दृष्टि व व्यवहार मामू छक्का आदि संबोधनों और स्वयं में उभरते लक्षणों के कारण वह यह जानने के लिए बेचौन हो जाती है। कि वास्तव में वह कौन है? नर नारी अथवा दोनों दोस्तों से अधूरी देवाला किन्नर?

जब सिमरन की मां बीमार पड़ जाती है उस समय सिमरन घर के सारे काम अच्छे ढंग से निपटाती है। यह सब देखकर उसकी मां का मन परेशान हो जाता है वह सोचती है यह लड़की की तरह पूरा घर संभाल रही है जो ना इसको लड़की कहकर ही पुकारा लेकिन समाज, मर्यादा, लोग क्या कहेंगे यह सब सोचकर उसको सिमरन का लड़कियों के कपड़े पहनना उनकी तरह कार्य करना कुछ हद तक जम नहीं रहा था।

सिमरन को लंबे बाल रखना, नाचना गाना सब पसंद था, लेकिन इन सब की घर से अनुमति नहीं मिली किन्नर रूप में जन्मे बालक को सर्वप्रथम अपने परिवार द्वारा विस्थापित किए जाने का दंश भोगना पड़ता है। शारीरिक विकलांगता से युक्त संतान की चिकित्सा के लिए अपार संपत्ति व करने तथा सभी संभावित प्रयास करने वाले माता-पिता अपने स्वाभिमान और सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए निर्ममता पूर्वक उसे त्याग लेते हैं।

उपयुक्त उपन्यास में किन्नर जनजीवन में व्याप्त शोषण, उपेक्षा, तिरस्कार, घृणा, संघर्ष जिजीविषा को पूरे सामर्थ्य के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें बिहार से लेकर मुंबई, दिल्ली, बलिया महानगरों में रेल में भीख मांगते किन्नर का जीवन वर्णन भी दर्शाया गया है। दरअसल 'किन्नर' शब्द से हिंदी में तात्पर्य देव योनि की एक जाति से है। महाभारत में अर्जुन को वृहन्नला के रूप में रहना पड़ा था। दरअसल अप्सरा उर्वशी के हिसाब से उसे 'कलीव' यानी तृतीय पंथी बनना पड़ा था। एक और स्थान पर महाभारत में शिखंडी का भी उल्लेख मिलता है।

सिमरन को परिवार के साथ रहने के बाद भी घोर आर्थिक विपन्नता सहनी पड़ी। उसके पिता ठाणे, महाराष्ट्र के एक दवा की कंपनी में मशीन ऑपरेटर का काम करने के साथ-साथ सदस्यों के अपने परिवार की गाड़ी चलाने के लिए नाश्ते की एक छोटी सी दुकान चलाते थे। इनकी मां भी सिलाई का काम करती थी।

हड़ताल के कारण पिता की नौकरी छूट गई। थी नाश्ते की दुकान व माता की सिलाई का काम ही परिवार का भरण पोषण करने में सहायक सिद्ध हुआ।

सिमरन को अल्पायु में ही एक कंपनी में काम करने के लिए साथ-साथ लोन की घास काटने, घर की सफाई और बर्तन मांजने वाला कार्य करना पड़ता।

सिमरन ने बड़ी मेहनत करके अपने दिन बिताए। उसके पिता और भाई ने उसको मारा पीटा ही नहीं घर से भी निकाल दिया। अर्थ लोभी मां उससे केवल पैसों के लिए ही संबंध रखती थी। उसकी मां समय पर अपनी बीमारी और अपेक्षा काम का बहाना कर उसे पैसे मांग लेती थी किंतु लौटने का वचन देने के बाद भी नहीं देती थी।

घर से निकाले जाने के बाद दर-दर भटकते समय बीमार होने पर भी उसको उत्तर प्रदेश के बलिया में जो संपत्ति थी वह भी मां ने मना कर दिया। अपनी मां का ऐसा बर्ताव देखकर सिमरन का मन अंदर तक हिल गया। किंतु पिता व भाई से स्वयं को काट नहीं पाती। एकांकी समय में उसको सभी की याद आती है वह मधुर स्मृति उसके मन पर हमेशा दस्तक देती रहती है।

"जब मां के साथ थी तब मां लड़ती रहती थी भाई का मारना, पीटना, तिरस्कार करना सब कुछ इसलिए बर्दाश्त किया क्योंकि वे मेरे अपने थे"।[2] उपन्यास में भी हवा का अंत तक आर्थिक सहायता देते रहने और उनके संपर्क के लिए तरसते रहने का प्रसंग अतिशयोक्ति पूर्ण और अस्वाभाविक है।

सिमरन उपन्यास की भाषा सामान्य व्यक्ति की समझ के साथ लिखी गई है। इस उपन्यास को खास से लेकर आम आदमी भी समझ सकता है। संवाद प्रभावपूर्ण हैं, शैली भी सामान्य है उर्दू के शब्द अपेक्षाकृत अधिक प्रयुक्त हुए हैं। यथा जन्नत, ख्याल, मजबूर, फरिश्ता, जेहन बुखार, खामोश, खामियाजा, मर्दानगी, हौसले, मकसद, इत्यादि।

जल ही जीवन है, भूखे पेट भजन नहीं होता, गोपाल जैसी उक्तियाँ तथा आग बबूला होना ठिका ना लेना, मवाली छाप, फूटी आंख न सुहाना, बखिया उधेड़ना, शातिर खिलाड़ी होना आदि मुहावरे यथा स्थान प्रयुक्त हुए हैं। इनसे उपन्यास में मुहावरे वाद भाषा का पुट दिखाई देता है। भावनात्मक शैली का प्रयोग भी जगह-जगह दर्शाया गया है।

अब सिमरन गाना सिखाती है तो वह बारीक आवाज में गाती है। जिसे सुनकर उसकी गुरु कहती है, 'हे रजनी तू औरत नहीं है एक हिजड़ा है। क्या धीमी पतली आवाज में गा रही है हिजड़ा हो तो हिजड़े जैसी रहो समझी।'[3]

अंत में यही कहना चाहता हूं कि उपन्यास में किन्नर जीवन की पीड़ा और उनके जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाया गया है। यह हमारे समाज के लिए सोचनीय विषय है कि हम अपनी मानसिकता को बदल कर इनको अपनाएं। और शिक्षा के प्रति जागरूक करें। जिससे इनका आने वाला भविष्य उज्जवल हो सके।

संदर्भ सूची

1. डॉ. मोनिका देवी : अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं. 23
2. डॉ. मोनिका देवी : अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं. 93
3. डॉ. मोनिका देवी : अस्तित्व की तलाश में सिमरन, पृ.सं. 96